

**ऋतु प्राप्त वि.** (तत्.) 1. रजोदर्शन प्राप्त महिला, गर्भवती होने योग्य स्त्री 2. फल देने योग्य वृक्ष 3. प्रजनन की इच्छुक पशु-मादा।

**ऋतु प्राप्ति स्त्री.** (तत्.) स्त्री का रजोदर्शन, गर्भवती होने योग्य अवस्था की प्राप्ति।

**ऋतु फल पुं.** (तत्.) विशिष्ट ऋतु में होने वाले फल, मौसमी फल।

**ऋतु भाग पुं.** (तत्.) किसी पदार्थ का छठा भाग या हिस्सा। (ऋतुओं के छः विभागों के आधार पर)।

**ऋतुमती स्त्री.** (तत्.) 1. रजस्वला, वह स्त्री जिसे मासिक धर्म हुआ हो 2. वह स्त्री जिसके रजोदर्शन के उपरांत 16 दिन व्यतीत न हुए हो और जो गर्भधारण योग्य हो।

**ऋतुराज पुं.** (तत्.) ऋतुओं का राजा-वसंत।

**ऋतुराज-सखा पुं.** (तत्.) ऋतुराज वसंत का मित्र-कामदेव।

**ऋतुविज्ञान पुं.** (तत्.) 1. विज्ञान की वह शाखा जिसमें वायुमंडल में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर मौसम, आँधी, वर्षा आदि का अनुमान लगाया जाता है, मौसम विज्ञान।

**ऋतु विपर्यय पुं.** (तत्.) एक ऋतु में उसके अनुकूल बातें जानकर अन्य ऋतु के लक्षण दिखाई देना, जैसे- गरमी में सरदी (गर्मी की ऋतु में वृष्टि)।

**ऋतुवृत्ति स्त्री.** (तत्.) ऋतु चक्र, ऋतुओं का आना-जाना।

**ऋतुवैषम्य पुं.** (तत्.) 1. ऋतु के अनुकूल आहार-विहार न करना 2. ऋतु की विषमता, तापमान में एकाएक परिवर्तन, उग्रता आदि।

**ऋतुषट्क पुं.** (तत्.) छह (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर) ऋतुओं का समूह।

**ऋतुसंधि स्त्री.** (तत्.) दो ऋतुओं का मिलन, संधि काल।

**ऋतुसंहार पुं.** (तत्.) कालिदास का षड्ऋतु वर्णन-विषयक प्रसिद्ध खंडकाव्य।

**ऋतुसात्म्य पुं.** (तत्.) मौसम के अनुसार आहार-विहार।

**ऋतुसेव्य पुं.** (तत्.) किसी विशेष ऋतु में व्यवहार लाने योग्य वि. (तत्.) ऋतु विशेष के अनुसार सेवन करने योग्य (पदार्थ)।

**ऋतुस्नान पुं.** (तत्.) स्त्री द्वारा रजोदर्शन के बाद प्रायः चौथे दिन किया जाने वाला स्नान।

**ऋतुसाव पुं.** (तत्.) दे. रजोधर्म।

**ऋतु स्त्री.** (तत्.) 1. प्राचीन काल में वैदिक कृत्य करने के लिए उपयुक्त और शुभ समय 2. गरमी, सरदी, वर्षा आदि के विचार से किसी भूभाग की समय-समय पर परिवर्तित होने वाली वातावरणिक स्थिति और तदानुसार होने वाला काल 3. रजोदर्शन के उपरांत।

**ऋत्विज पुं.** (तत्.) यज्ञ के पुरोहित के रूप में काम करनेवाला, मुख्य याज्ञिक, पुरोहित टि. यज्ञ करने वालों में मुख्यतः ऋत्विज चार होते हैं उद्गाता, अध्वर्यु, और ब्रह्मा।

**ऋद्ध वि.** (तत्.) 1. धनवान, संपन्न, वैभवशाली, फलता-फूलता 2. वर्धमान, बढ़ता हुआ पुं. विष्णु।

**ऋद्धि स्त्री.** (तत्.) 1. विकास, वृद्धि, संपन्नता, समृद्धि 2. सफलता, संपन्नता, बहुतायत 3. तप से प्राप्त दिव्य शक्ति 4. एक औषधि या लता जिसका कंद दवा के काम आता है।

**ऋद्धिकाम वि.** (तत्.) 1. धन संपत्ति, वैभव, प्रगति चाहने वाला। 2. ऋद्धि नामक दिव्य शक्ति चाहने वाला।

**ऋद्धि-सिद्धि स्त्री.** (तत्.) 1. समृद्धि और सफलता 2. सभी प्रकार का वैभव।

**ऋश्य पुं.** (तत्.) 1. एक विशेष प्रकार का हिरन 2. जिसका शरीर काला और पैर सफेद होते हैं।